आरबीआई: स्थिरता, विश्वास, विकास

एक मज़बूत और लचीली वित्तीय प्रणाली ही वह नींव है जिस पर किसी देश की आर्थिक समृद्धि की इमारत खड़ी होती है। भारतीय रिज़र्व बैंक हमारी वित्तीय प्रणाली का संरक्षक है। कल इसने अपनी यात्रा के 90 वर्ष पूरे किए। हमारे 90वें वर्ष की थीम थी 'स्थिरता, विश्वास और विकास'।

यह उन सभी बातों को दर्शाता है जिनके लिए आरबीआई खड़ा है। यह सही समय है कि हम अपने अतीत पर विचार करें और देखें कि हम मौद्रिक और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने; वित्तीय प्रणाली में विश्वास बढ़ाने; और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने तथा अपने लोगों की भलाई में सुधार करने के अपने दायित्व को और बेहतर ढंग से कैसे निभा सकते हैं।

कीमतों में स्थिरता

स्थिरता का मतलब है कीमतों में स्थिरता। यह इसलिए ज़रूरी है क्योंकि महंगाई पैसे की कीमत को कम कर देती है। इससे लोगों को नुकसान होता है; गरीबों को तो और भी ज़्यादा। हालाँकि, सारी महंगाई बुरी नहीं होती। विशेषज्ञों का मानना है कि महंगाई का एक मध्यम स्तर आर्थिक विकास के लिए अच्छा होता है। अगर महंगाई बहुत कम हो, तो अर्थव्यवस्था को ठहराव का खतरा होता है। अगर यह बहुत ज़्यादा हो, तो कीमतें अप्रत्याशित हो जाती हैं, जिससे उपभोक्ताओं और व्यवसायों के लिए योजना बनाना और निवेश करना मुश्किल हो जाता है। हमने सीपीआई महंगाई के लिए 2% के दायरे के साथ 4% का लक्ष्य निर्धारित किया है।

सीपीआई महंगाई ज़्यादातर लक्ष्य के अनुरूप ही रही है। लचीली महंगाई लक्ष्यीकरण की समीक्षा का समय आ गया है। हम सरकार के साथ मिलकर न केवल इस ढांचे को बेहतर बनाएंगे, बल्कि उचित मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों के माध्यम से महंगाई और विकास के लिए अनुकूल स्थितियाँ भी हासिल करेंगे।

वित्तीय स्थिरता

स्थिरता का मतलब वित्तीय स्थिरता भी है, जो विकास और अन्य विकासात्मक लक्ष्यों को पूरा करने में कीमतों में स्थिरता की पूरक होती है। हमारी वित्तीय प्रणाली स्थिर रही है - एक ऐसी प्रणाली जिसने संकट के समय में भी वास्तविक क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों को सुचारु रूप से सहारा दिया है। वित्तीय संस्थानों ने अच्छा प्रदर्शन किया है। बैंक और एनबीएफसी ज़्यादा मज़बूत हैं और वित्तीय मध्यस्थता को प्रभावी ढंग से करने के लिए उनके पास पर्याप्त पूंजी है।

बाह्य स्थिरता

स्थिरता में स्थिर विदेशी मुद्रा दरें भी शामिल हैं, जो न केवल आयातकों, निर्यातकों और निवेशकों के लिए, बल्कि आम जनता के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। भारत के विदेशी मुद्रा बाज़ार में दबावों का सामना करने के लिए ज़रूरी गहराई और चलनिधि है, जैसा कि हमने पिछले कुछ महीनों में देखा

है। विदेशी मुद्रा भंडार का स्वस्थ स्तर और एक प्रबंधनीय चालू खाता संतुलन भी विश्वास दिलाने वाले हैं। रिज़र्व बैंक विनिमय दर के किसी विशेष स्तर या दायरे को लक्ष्य बनाए बिना, अत्यधिक अस्थिरता को नियंत्रित करने में सहायक बना रहेगा।

विश्वास

एक केंद्रीय बैंक के लिए विश्वास कई कारणों से महत्वपूर्ण है। मुद्रा अपना उद्देश्य तभी पूरा करेगी जब जनता को यह विश्वास हो कि इसका उपयोग करना सुरक्षित है। जब जनता अपनी मेहनत की कमाई बैंकों में जमा करती है, तो वह भरोसे पर ही निर्भर करती है। मौद्रिक नीति को मुद्रास्फीति की उम्मीदों को स्थिर रखने के लिए भरोसे की आवश्यकता होती है। वित्तीय स्थिरता के लिए विश्वास महत्वपूर्ण है। यह वित्तीय बाजारों और भुगतान तथा निपटान प्रणालियों की अखंडता का एक अभिन्न अंग है।

जनता ने हम पर जो विश्वास जताया है, हम उसे और मजबूत करना जारी रखेंगे। गुणवत्तापूर्ण ग्राहक सेवा और अनुभव सुनिश्चित करना लोगों का विश्वास बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम सेवाओं को बेहतर बनाने और शिकायतों को कम करने के लिए वित्तीय संस्थाओं के साथ मिलकर काम करेंगे।

विश्वास पैदा करने के लिए एक केंद्रीय बैंक की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है। हालाँकि, स्वतंत्रता के लिए पारदर्शिता की आवश्यकता होती है। स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि परामर्श न किया जाए–चाहे वह आम जनता के साथ हो, विनियमित संस्थाओं के साथ, अन्य वित्तीय नियामकों के साथ, या सरकार के साथ। वास्तव में, यह और भी अधिक अनिवार्य हो जाता है। स्वतंत्रता के लिए उच्च जवाबदेही की भी आवश्यकता होती है। हम इस बात के प्रति पूरी तरह सचेत रहे हैं और विभिन्न उपायों के माध्यम से पारदर्शिता को और बेहतर बनाने, परामर्श, समन्वय और सहयोग को बढ़ाने, तथा जवाबदेही को ऊँचा उठाने का प्रयास करेंगे।

विकास

प्रधानमंत्री ने 2047 तक एक 'विकसित भारत' की परिकल्पना की है। इसमें समावेशी और त्वरित आर्थिक विकास शामिल है। भारत के विकास को छलांग लगाने के लिए नीति-निर्माण को व्यावहारिक और दूरदर्शी–दोनों होना होगा। आरबीआई के पास स्थिरता सुनिश्चित करते हुए नवीन नीतिगत उपायों को लागू करने का एक शानदार ट्रैक रिकॉर्ड है। महामारी के प्रति इसकी प्रतिक्रिया इसका एक जीता-जागता उदाहरण है।

आर्थिक विकास को समर्थन देने के अपने प्रयास में हम सक्रिय, चुस्त और लचीले बने रहेंगे। हालाँकि हमने वित्तीय समावेशन को बेहतर बनाने में काफी लंबा सफर निर्धारित किया है, फिर भी हम वित्तीय संस्थानों के साथ मिलकर पहुँच का विस्तार करने के लिए काम करेंगे–विशेष रूप

से 'पिरामिड के सबसे निचले स्तर' (समाज के सबसे निचले तबके) तक। हम बैंकों और एनबीएफसी को डेटा और उन्नत तकनीक का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे, ताकि वे अपनी ऋण देने की क्षमता को बढ़ा सकें। इसमें अर्थव्यवस्था में क्रेडिट की आपूर्ति को तेज़ करने की क्षमता है – बिना वित्तीय स्थिरता से समझौता किए–ताकि निवेश और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सके।

इसके अलावा, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे और एक विकसित अर्थव्यवस्था बनने की अपनी यात्रा में वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ और अधिक एकीकृत होंगे, हमारे भुगतान प्रणालियों और मुद्रा को दुनिया भर में व्यापक रूप से मान्यता मिलनी चाहिए। हमने इस दिशा में पहले ही कुछ कदम उठाए हैं। हम रुपये को अंतरराष्ट्रीय बनाने और भारत की भुगतान प्रणालियों को वैश्विक बनाने के लिए लगातार पहल करते रहेंगे।

प्रौद्योगिकी

प्रौद्योगिकी में तेज़ी से हुई तरक्की ने आरबीआई को स्थिरता, भरोसे और विकास के अपने मकसद को पूरा करने में सहायता की है। अलग-अलग बैंकिंग सेवाओं का डिजिटलीकरण, यूपीआई और खाता समेकक इस मामले में कुछ उदाहरण हैं। यह बहुत ज़रूरी है कि हम प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करें और नवाचार को बढ़ावा दें ताकि वित्तीय समावेशन को और गहन और व्यापक बनाया जा सके; मौद्रिक नीति, बैंकिंग और मुद्रा प्रबंधन (जिसमें सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी भी शामिल है) को बेहतर बनाया जा सके; भुगतान प्रणाली को सबके लिए उपलब्ध कराया जा सके; एकीकृत ऋण इंटरफ़ेस के माध्यम से क्रेडिट का विस्तार किया जा सके; और ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाया जा सके। इस अवसर पर, मैं सभी को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम व्यावसायिकता के सबसे ऊंचे मानक बनाए रखेंगे और सार्वजनिक सेवा के मूल्य - ईमानदारी, निष्पक्षता, मेहनत, निष्पक्षतावाद, जवाबदेही, निर्णायकता और पारदर्शिता को बनाए रखेंगे। हम अपने देश और इसके नागरिकों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए एक सुरक्षित, महफ़ूज़ और स्थिर वित्तीय प्रणाली को बढ़ावा देते रहेंगे। एक अग्रणी केंद्रीय बैंक बनने के लिए रिज़र्व बैंक ने जो महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं, वे बेशक मुश्किल हैं, फिर भी फायदेमंद और ज़रूरी हैं।

जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था, “भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम अभी क्या करते हैं।” आरबीआई देश की सेवा में खुद को फिर से समर्पित करता है।

(टाइम्स ऑफ इंडिया में 01 अप्रैल 2025 को एक कॉलम के तौर पर प्रकाशित हुआ)